INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjournney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra. **Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl **Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India **Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India **Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India **Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India **Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security **R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation **Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries **Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India **Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice **Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector **Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India **Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection **Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग	
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या **डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या **दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही **प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे **डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष) **डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम **डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या **डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ **डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद **डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में) **डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य **डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ **डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्टाचार की समस्या **डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्टाचार **महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव **किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या **डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल **संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में) **डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या **डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि **ऋचा राय**	257

हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या

डॉ.रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई,
जि. बीड, (महाराष्ट्र)

डॉ. मनोजकुमार ठोसर
हिंदी विभाग
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई,
जि. बीड, (महाराष्ट्र)

ग़ज़ल काव्य-विधा की लोकप्रियता ने भारतीय समाज को ही नहीं भारतीय भाषाओं को भी प्रभावित किया है। ग़ज़ल मूलतः प्रेमाभिव्यक्ति की काव्य-विधा के रुप में जानी जाती थी। उसमें संयोग एवं वियोग श्रृंगार का वर्णन मिलता है। विरह या वियोग ही ग़ज़ल का मूल आधार है। परंतु आपात्काल के बाद हिंदी कविता की परंपरा में ग़ज़ल को दुष्यंतकुमार ने एक नया स्थान निर्माण किया। उन्होंने ग़ज़ल को एक नए शिखर पर पहुँचाया। मोहभंग और भारतीय मनुष्य की समस्याओं को उन्होंने ग़ज़ल के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्त किया। जिससे हिंदी ग़ज़ल और दुष्यंतकुमार के शेर मुहावरों के समान भारत में स्थापित हो गए। दुष्यंतकुमार के बाद हिंदी ग़ज़लकारों ने समसामायिक जीवन की समस्याओं को यथार्थ रुप में व्यक्त किया है। जिसके परिणामस्वरुप वर्तमान समय की समसामायिक जीवन की अभिव्यक्ति की परंपरा आज भी कायम है। भारत में एक गरीब देश है और दूसरा धनवान इंडिया है ऐसा बहुत बार सुना है। यह यथार्थ गरीबों को अधिक गरीब बनाने की कोशिश में है। उनका शोषण करनेवाली व्यवस्था देश में कार्यरत है। प्रस्तुत व्यवस्था का यथार्थ चित्रण हिंदी ग़ज़ल में दिखाई देता है। दुष्यंतकुमार, अदम गोंडवी, विनय मिश्र, अशोक अंजुम, जहीर कुरैशी, देवेंद्र आर्य आदि ग़ज़लकारों ने डंके की चोट पर इस यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। भारतीय आम आदमी के जीवन की आर्थिक यथार्थता हिंदी ग़ज़ल में अभिव्यक्त हुई है। उनकी स्थिति का यथार्थ चित्रण ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में किया है।

दुष्यंतकुमार ने ग़ज़ल के माध्यम से व्यवस्था विरोध कर शोषण करनेवाली व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन स्थापित किया था। उनके साथ इस आंदोलन में जितने गरीब लोग है उनकी परिस्थिति किस प्रकार की है इसका वर्णन वे करते हैं। गरीबों को पहनने के लिए कमीज नहीं है, खाने को खाना नहीं है परंतु फिर भी इस आंदोलन के रास्ते में उनका साथ दुष्यंतकुमार को मुनासिब लगता है। उनका शेर देखिए-

"न हो कमीज तो पाँवो से पेट ढँक लेंगे,
वे लोग कितने मुनासिब है इस सफर के लिए।"[1]

भारतीय समाज की स्थिति और स्थिति का विरोध न करनेवाली मानसिकता का चित्रण दुष्यंतकुमार करते हैं। इस आर्थिक समस्या का अनुभव जिन नेता और अफसरों को कभी हुआ नहीं। उन्हें गरीबी क्या समझ में आएगी। परंतु भारतीय नागरिक इतनी सारी समस्याओं को झेलकर भी उनका विरोध करता नहीं है। इसका चित्रण शेर में देखिए-

"आपने लौ छुई नहीं आप कैसे अदीब है
ऊफ नहीं की उजड़ गए लोग सचमुच गरीब है।"[2]

ऊपर्युक्त शेर से यह बात स्पष्ट होती है कि जिनका सबकुछ समाप्त होकर भी वे लोग विरोध नहीं करते। उनकी गरीबी किस हदतक पहुँची है।

ग़ज़लकार डॉ.उर्मिलेश प्रगतिशील ग़ज़लकार है। वे गरीबी को समाप्त न होने देनेवाली व्यवस्था का चित्रण करते हैं। गरीबी के लिए साजिश, षडयंत्र और भ्रष्ट प्रवृत्ति ने किस प्रकार विकसित किया है। इसका यथार्थ चित्रण

ISSN : 2348-7143
October-2019

देखिए। उद्योजक एवं राजनीतिज्ञों की साठ-गांठ का यथार्थ प्रस्तुत किया है। शिक्षा, सेवा एवं योजनाओं के अभाव में जिने के लिए मजबूर करनेवाली भ्रष्ट राजनीतिक प्रवृत्ती का असली रुप हमारे सामने उर्मिलेशजी प्रस्तुत करते हैं-

"गरीबों के ये बच्चे बड़े जाहिल बनेंगे ये
अगर कुछ पढ़ गये तो आपकी मुश्किल बनेंगे ये।"[3]

इस तरह उर्मिलेशजी गरीबों के विरोध में चल रहे षडयंत्र के चेहरे बेनकाब करते हैं। ग़ज़लकार राजेश रेड्डी आम मनुष्य की अर्थाभाव को ग़ज़ल में अभिव्यक्त करते हैं। गरीबी के कारण मनुष्य की मानसिक स्थिति कैसी हो जाती है और उसको कैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसका मनावैज्ञानिक चित्रण राजेश रेड्डी ने किया है। दिनभर मेहनत करनेवाले पिताजी घर लौटते समय जब खाली हाथ जाते है तो उसकी क्या अवस्था होती है उसकी ग़ज़ल में अभिव्यक्ति देखिए-

"शाम को जिस वक्त खाली हाथ घर जाता हूँ मैं
मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं।"[4]

आम आदमी अपनी अभावों की समस्याओं को समाप्त करने की कोशिश करता है। परंतु उम्र भर जुटाने और जोड़ने के चक्कर में वह स्वयं ही टूट जाता है। मेले में जाता है तो बच्चों को खिलौनें की दुकानों से बचाता है। गरीबी एवं अर्थाभाव की समस्याओं का सामना करनेवाले मनुष्य की मानसिक स्थिति के साथ संघर्ष की यथार्थ अभिव्यिक्ति ग़ज़लकारों ने कि है। राजेश रेड्डी की "ग़ज़लों में ऐसे दुखी इंसानो की कराह सुनाई देती है जिसे अपने कुछ खो जाने की गम सदा सलता रहता है। राजेश फनकारी में उलझने की बजाय, अपने महसुसात में उसे शरीक करने के काइल है।"[5] यहाँ उनकी गरीबों के प्रति जो सहानुभूति है उससे उनके अनुभूति भी समझमें आ जाती है। उनकी गरीबों के प्रति अनुभूति की यथार्थ अभिव्यक्ति देखिए-

"कुछ उम्र जुटाने में तो कुछ जोड़ने में गुजरी
बढ़ते हुए संसार में घटता ही गया मैं।
मेले में थी जिस सिम्त खिलौनों की दुकानें
उस सिम्त से बच्चों को बचाता ही गया मैं।"[6]

ग़ज़लकार अशोक अंजुम मनुष्य की गरीबी के कारण निर्मित जीवन की विविध समस्याओं को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। घर गिरवी रखना, मेहनत करना, मनुष्य की चेहरों पर पडी झुर्रियाँ, रोटी दाल की तलाश में मेहनत कर जीवन जीनेवाले मनुष्य समाज से बेदखल हो जाते हैं। इसका कारण क्या है यह मत पूछिये। यह प्रश्न ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लद्वारा समाज के सामने रखते हैं। उनका शेर देखिये-

"क्यों रखा गिरवी मकां मत पूछिये
पड गयी क्यों झुर्रियाँ मत पूछिये।
खोजने निकला जो रोटी दाल को
खो गया है वह कहाँ मत पूछिये।"[7]

डॉ.कुँअर बेचैन गरीबी एवं अर्थाभाव से पीड़ित मनुष्य का चित्रण ग़ज़ल में करते हैं। महाजन के ब्याज से बेबस, मजबूर, शोषित, उपेक्षित एवं पीड़ित तथा सेठ और नेताओं की सेवा करनेवाले मनुष्य को 'रामफल' के रुप में चित्रित करते हैं। "कुँअर बेचैन ने समाज की दोहरी आर्थिक नीति तथा उसके खोखलेपन का यथार्थ चित्रण अपनी गजलों में किया है। साथ ही पूँजीपतियों के दोनों चेहरे को बेनकाब किया है। इसी निराशा और पीड़ा को कुँअर बेचैन ने अपनी गजलों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है।"[8] प्रतीकात्मक रुप में वास्तविक चित्रण कुँअर जी के ग़ज़ल में देखिये-

"मारा है जिसको रोज महाजन के ब्याज ने
बेबस से एक गरीब का रुपिया है रामफल।

जिसको दबा- के सो रहे है सर बडे-बडे
महलों के खानदान का तकिया है रामफल।"[9]

इस तरह बेचैनजी ने गरीबों की बेबसी और भ्रष्ट व्यवस्था द्वारा उनको दबा के रखने की साजिश को चित्रित किया है। ग़ज़लकार सुल्तान अहमद ने अभाव, गरीबी, गरीबों की समाज में स्थिति, अनादर, अकेलापन इन्कार और नकार, भूख, मजदूरी, शोषण एवं उत्पीड़न, बेरोजगारी, मुलभूत जरुरतों के अभाव में होनेवाली घुटन, संत्रास एवं निराशा भरे जीवन संघर्ष को अपने ग़ज़ल में चित्रित किया है। उक्त समस्याओं के साथ ही आर्थिक विषमता, व्यवस्था विरोध, आदि समस्याओं के साथ ही मनुष्य की गरीबी से होनेवाली मानसिक स्थिति का भी चित्रण किया है। उनके शेर देखिए-

"अभावों में भीतर तलक भर गया हूँ
उठाया गया हूँ मैं जिस घर गया हूँ।
मिला जो भी मुझसे निगाहें बचाकर
न जाने क्या ऐसा गुनाह कर गया हूँ।"[10]

ग़ज़लकार ज्ञानप्रकाश विवेकजी ने गरीब मनुष्य की अर्थाभाव में जीवन जीने की मानसिक स्थिति का सटीक चित्रण किया है। गरीब बारात में शामिल होने की इच्छा होकर भी स्वयं को रोकता है। वह अपने फटे कपडे एवं टूटे जूतों के कारण लोगों में आना नहीं चाहता। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में गरीबों की क्या स्थिति हुई है इसकी सत्यता हमें ग़ज़लकार ने दिखायी है। उनका शेर देखिए-

"मै इसलिए नहीं बारात में हुआ शामिल
फटी कमीज है जूते भी कुछ पुराने है।"[11]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिंदी ग़ज़लकारों ने अपने ग़ज़लों में गरीबी एवं गरीबीं से लड़ते मनुष्य जीवन की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। उनकी बेबसी, शिक्षाभाव, रोटी के लिए भाग-दौड, मेहनत, अभावों का जीवन, झुर्रियों से चेहरे, बेरोजगारी, अनादर, मानसिक घुटन, संत्रास, निराशा, ऊब, आदि भयावह समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। भूख, बेरोजगारी, मजदूरी, आर्थिक विषमता, व्यवस्था द्वारा निर्मित षडयंत्र एवं साजिश का पर्दाफाश करते हुए पूँजीपति एवं राजनीति के साठ-गांठ का यथार्थ चित्रण ग़ज़लकारों ने किया है। साथ ही उनके असली चेहरे को बेनकाब कर गरीबों को शोषण, उपेक्षा एवं उत्पीड़न का विरोध करने की प्रेरणा ग़ज़लकारों ने दी है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. साये में धूप- दुष्यंतकुमार, पृ.13
2. वही, पृ.37
3. डॉ. उर्मिलेश की ग़ज़लें- संपा.नित्यानंद तुषार, पृ.36
4. अनहद- राजेश रेड्डी, पृ.18
5. हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा- ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ.182
6. अनहद- राजेश रेड्डी, पृ.67
7. अशोक अंजुम की प्रतिनिधि ग़ज़लें- अशोक अंजुम, पृ.112
8. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष- रघुनाथ कश्यप, पृ.154
9. आँधियों धीरे चलो- कुँअर बेचैन, पृ.94
10. खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी- सुल्तान अहमद, पृ.65
11. गुफ्तगू अवाम से है- ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ.13